ISSN - 2231 - 2749

MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD
(Regd. No. 52/3-3-1958)

Executive Board
(2020-2023)

President	Prof. B. K. Shrivastava
Vice-President	Prof. S. D. Sisodia
Secretary	Prof. Naveen Gideon
Joint Secretaries	Prof. Madhubala Kulshreshtha
	Prof. Zarina John Choudhry
Treasurer	Prof. Anil Dubey
Editors	Prof. Vandana Gupta
	Prof. R. N. Shrivastava
Members	Prof. Meena Shrivastava
	Dr. Vibha Rathod
	Dr. Pankaj Singh

The Parishad is grateful to Dr. Naveen Gideon Professor of History Govt. Autonomous Girls P.G. of Excellence Sagar for providing financial support to the Parishad for publishing the Journal of Madhya Pradesh Itihas Parishad.

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 35 2022

A PEER REVIEWED

JOURNAL

OF THE

MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

EDITORS

Prof. Vandana Gupta **Prof. R. N. Shrivastava**

15. दकन का ऐतिहासिक भूगोल 72
डॉ. नवीन गिडियन
16. स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों का योगदान : माधवराव सप्रेजी के विशेष संदर्भ में 81
निधि सजवान
17. बुन्देलखण्ड में स्वतंत्रता संघर्ष के साहित्यिक नायक : पंडित घासीदास व्यास 85
डॉ. प्रणव देव
18. कलचुरी (त्रिपुरी) कला में वराह 91
डॉ. आर.एन. श्रीवास्तव
19. जैन धर्म में यक्ष की अवधारणा 96
डॉ. आर.पी. सिंह
20. अहिंसा के पुजारी : महात्मा गाँधी 100
डॉ. शोभना पाण्डेय
21. हरीसिंह गौर पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर की शाक्त प्रतिमाएं : प्रतिमाशास्त्रीय विधान 104
डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
22. ''केन्द्रीय कारागार जबलपुर'' सुभाषचन्द्र बोस के विशेष संदर्भ में 110
डॉ. वन्दना गुप्ता
23. व्यक्तिगत सत्याग्रह : जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में 114
डॉ. जरीना जॉन चौधरी
24. कौटिल्य और सुशासन 118
डॉ. भावना यादव
25. डॉ. हरिसिंह गौर का नारी उत्थान एवं समाज सुधारक के रूप में योगदान 125
डॉ. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
26. 1857 के संग्राम में मध्यप्रदेश के जिलों में बुंदेला विद्रोह की भूमिका का अध्ययन 132
डॉ. अलीमा शहनाज़ सिद्दकी
27. भिण्ड जिला और स्वतंत्रता सेनानी रघुवीर सिंह कुशवाह 135
आशु अहिरवार
28. छत्तीसगढ़ में सामंती राज्यों के विलीनीकरण में प्रजामंडल का योगदान 138
डॉ. अविनाश अवस्थी
29. भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास 144
डॉ. नीरज जायसवाल

हरीसिंह गौर पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर की शाक्त प्रतिमाएं : प्रतिमाशास्त्रीय विधान

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

हिन्दू धर्म में देवी को विशेष महत्त्व प्राप्त है। वह आदि काल से ही शक्ति के रूप में पूज्य रही है। इस आदि शक्ति को मातृत्व के गौरवान्वित पद पर सुशोभित किया गया है। मातृ-पूजन की परम्परा भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर है। माता के रूप में देवी जनसाधारण के मध्य अन्य देवताओं की अपेक्षा अधिक निकट है। इन्हें महिमाता, जगदम्बा, अम्बा, अम्बामाई, महामाई, माता, मातृदेवी आदि नामों से जाना जाता है।[1]

प्रस्तुत शोध पत्र मध्यप्रदेश के सागर जिले में अवस्थित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय की विशिष्ट शाक्त प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में शाक्त प्रतिमाओं का शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसमें शाक्त प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण, उनकी भाव-भंगिमा, शारीरिक व आलंकारिक सौन्दर्य तथा काल गणना पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही इन प्रतिमाओं के आधार पर क्षेत्र के धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विविध पहलुओं आदि पर भी विचार-विमर्श किया गया है।

हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में शाक्त धर्म से संबंधित विविध देवियों की प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। ये शाक्त प्रतिमाएँ सौम्य एवं उग्र स्वरूपों वाली हैं। जिनमें महिषासुरमर्दिनी दुर्गा, चामुण्डा, लक्ष्मी, कौमारी, वाराही, पार्वती एवं सप्तमातृकाएँ आदि महत्वपूर्ण हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

दुर्गा

दुर्गा की उपासना अनेक रूपों में होती रही है। कभी-कभी उनकी काल्पनिक आयु के आधार पर उन्हें संध्या, सरस्वती, चण्डिका, गौरी, महालक्ष्मी, ललिता आदि अनेक नाम प्रदान किये गये हैं।[2] यथा - एक वर्ष की आयु वाली बालिका के रूप में उनका नाम सन्ध्या, दो वर्ष की सरस्वती, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शाम्वी, नव वर्ष की दुर्गा, दस वर्ष की गौरी, तेरह वर्ष की महालक्ष्मी तथा सोलह वर्ष की वे ललिता कही गयी। महिषासुरमर्दिनी दुर्गा शक्ति सम्पन्न दुर्गा का ही एक रूप है, जो महिषासुर का वध करने के कारण महिषासुर मर्दिनी कहलायी। इनकी स्तुति महाभारत में महिषासुरनाशिनी[4] महिषासृकप्रिया[5] आदि नामों से की गयी है। इस देवी के उत्पत्ति से संबंधित विवरण पुराणों में विस्तार से मिलते हैं, जहाँ इनको देवताओं के तेजपुंज से प्रकट हुआ बताया गया है। मार्कण्डेय पुराण[6] एवं देवी भागवत पुराण[7] के अनुसार पूर्वकाल में दैत्यराज महिषासुर देवराज इन्द्र को पराजित कर स्वयं इन्द्र बन बैठा। देवताओं की पराजय के कारण क्रोधित विष्णु, शिव, ब्रह्मा,

इन्द्राणी देवताओं के शरीर से निकला हुआ तेजपुंज एकत्र होकर स्त्री रूप में परिणत हो गया। विभिन्न देवताओं के तेज से देवी के भिन्न-भिन्न अंगों का प्रादुर्भाव हुआ यथा शिव के तेज से मुख, विष्णु के तेज से भुजाएँ, ब्रह्म के तेज से चरण आदि। इस देवी को सभी देवताओं ने अपने-अपने विशिष्ट आयुधों को देकर सम्मानित किया। हिमालय ने वाहन के रूप में सिंह को भेंट दिया। इस रूप में दुर्गा रणभूमि में महिषासुर की सेना का संहार करने लगी। अपनी सेना की यह दशा देखकर महिषासुर ने महिष का रूप धारण किया और अपने सीगों, मुख, खुरों, पूँछ आदि से देवी के गणों पर प्रहार किया। दबे हुये महिष के मुख से दैत्य (पुरुष रूप) बाहर आने लगा, किन्तु देवी ने दैत्य का निकलना रोक दिया। तब दैत्य इसी रूप में देवी से युद्ध करने लगा। अन्ततः देवी ने उसका वध कर दिया। यही कथा आंशिक भिन्नता के साथ अन्य पुराणों[ँ] में भी मिलती है। पुराणों[ँ] में महिषासुरमर्दिनी दुर्गा को अम्बिका भद्रकाली, चण्डिका, कात्यायनी, विन्ध्यवासिनी आदि नामों से विभूषित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण, रूपमण्डन, अंशुमद्भेदागम, अपराजितपृच्छा आदि प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थों में दुर्गा के विविध स्वरूपों का वर्णन मिलता है।

प्राप्ति स्थल : एरण, सागर, म. प्र. **प्रतिमा :** महिषासुर मर्दिनी दुर्गा
प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 8वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 39x26 सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.313

प्रस्तुत प्रतिमा को एक प्रस्तर फलक पर उत्कीर्ण किया गया है। चतुर्भुजी दुर्गा करण्डमुकुट, कुण्डल, ग्रैवेयक, भुजबंध, कटिसूत्र, कंकण एवं पादवलय आदि आभूषणों से सज्जित है। उनके दाहिने ऊपरी हाथ में खड्ग एवं निचले हाथ में त्रिशूल द्वारा महिष के पीठ पर प्रहार करते हुये दिखलाया गया है। बायें ऊपरी हाथ में ढ़ाल एवं निचले हाथ से महिष के जबड़े को पकड़े हुये दिखलाया गया है। महिष के ऊपर देवी आलीढ़मुद्रा में अपना पैर रखे हुयी हैं। देवी दुर्गा का वाहन सिंह महिष पर पीछे से आक्रमण करते हुये दिखलाया गया है।

प्राप्ति स्थल : सागर, म. प्र. **प्रतिमा :** बीसभुजी दुर्गा
प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 11वीं शताब्दी ईसवी
आकार : 102x64सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.389

प्रस्तुत दुर्गा की प्रतिमा त्रिरथ पादपीठ पर निर्मित है। कमलासन पर ललितासनमुद्रा में आसनस्थ बीस भुजाओं वाली देवी के लगभग आधे हाथ खण्डित हैं। दुर्गा देवी के दोनों पार्श्वों में पादपीठ पर दो सिंहव्यालों एवं बायीं तरफ एक सेविका का अंकन किया गया है। जटामुकुट धारण की हुयी देवी विविध आभूषणों से सज्जित है, जिनमें कानों में कुण्डल, हार, बाजुबंध, कंकण, मेखला एवं पायबंध हैं। देवी का जंघा कदली वृक्ष की भाँति विकसित एवं गोल, कुच और नितम्ब उन्नत एवं पुष्ठ दिखाये गये हैं। उनके दाहिनी भुजाओं में गदा, अंकुश, अक्षमाला, डमरू, वज्र, तरकश एवं सबसे निचला हाथ वरदमुद्रा में है। बायीं ओर की भुजाओं में हल, खड्ग, कमण्डलु एवं अन्य भुजा खण्डित हैं। फलक के सबसे ऊपरी पार्श्वों में दोनों तरफ मालाधारी विद्याधरों का अंकन है, जिसके ठीक नीचे ललितासनमुद्रा में कमलस्थ द्विभुजी देवी का अंकन है, जिनके हाथों में खड्ग एवं शूल लिये हुये दिखया गया है। अंशुमद्भेदागम एवं सुप्रभेदागम में देवी दुर्गा के इस प्रकार के प्रतिमा लक्षणों का वर्णन मिलता है।

चामुण्डा

मातृकाओं के मध्य चामुण्डा का स्थान विशिष्ट है। विभिन्न ग्रन्थों में चामुण्डा का प्रतिमा शास्त्रीय लक्षण मिलता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[10], गरुण पुराण[11], अपराजितपृच्छा[12], रूपमण्डन[13] एवं अंशुमदभेदागम[14] में चामुण्डा को प्रेत पर बैठी हुयी रक्तवर्णी क्षीण, विकृत देहवाली बतलाया गया है। उनके दाँत निकले हुये, रूप भयंकर एवं उसकी दस भुजाएँ होती हैं, जिनमें से दाहिने तरफ की पाँच भुजाओं में मूसल, चक्र, बाण, अंकुश और खड्ग तथा बाएँ तरफ पाँच भुजाओं में ढाल, पाश, धनुष, दण्ड और कुठार होती है।

प्राप्ति स्थल : सागर, म. प्र. **प्रतिमा :** सोलहभुजी चामुण्डा

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 12वीं शताब्दी ईसवी

आकार : 60x50 सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.426

प्रस्तर फलक पर उत्कीर्ण देवी चामुण्डा अर्धपर्यंकासनमुद्रा में प्रदर्शित हैं। प्रभामण्डल से युक्त मुकुट धारण किये, लम्बे कर्णाभूषण, हार, उत्तरीय, भुजबंध एवं हस्तकटक से अलंकृत देवी का अधोभाग कंकाल रूप में है। उनका क्षीण शरीर, उभरी हुयी आँखे, उभरे हुये दाँत, धँसा हुआ पेट एवं मुरझाए हुये देवी को वीभत्स रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं। देवी के अधिकांश हाथ खण्डित हैं। शेष बचे हाथों में खड्ग, खटवांग, खेटक एवं त्रिशूल है। चामुण्डा देवी अपने दो हाथों में घुटने पर रखी कटार से दैत्य का पेट विदीर्ण कर रही हैं तथा दो प्रेत उसके हाथ एवं पैर को काट रहे हैं। देवी के प्रभामण्डल के ऊपर एक अन्य दैत्य को उनके अनुचर प्रेतों द्वारा भक्षण करते हुये दिखया गया है।

पार्वती

शैव-शाक्त परम्परा में पार्वती मूर्तियों के पूजन का विशेष महत्व है। गौरी का दूसरा(विवाहित) रूप पार्वती है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में उन्हें चतुर्भुजी गौर वर्ण का बताया गया है। इनके हाथों में अक्षसूत्र, पद्म, कुण्डल तथा शेष अभय मुद्रा में रहता है। ये कमल पर आसीन रहती हैं।[15] रूपमण्डन में पार्वती शिव के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान रहती हैं और उनके साथ वृषभ पर आरूढ़ होकर विहार करती हैं। चतुर्भुजी पार्वती के हाथों में अक्षमाला, कमण्डल, अन्य हाथ शिव के स्कन्ध पर अथवा गणेश या कार्तिकेय को पकड़े हुये दिखलाया जाता है।

प्राप्ति स्थल : लोहारी, जबलपुर, म. प्र. **प्रतिमा :** पार्वती

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 12वीं शताब्दी ईसवी

आकार : 77x41 सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.314

चतुर्भुजी पार्वती को समभंगमुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। वे अलंकृत केशराशि, कर्णकुण्डल, हार, केयूर, कंकण, पायल, कटिबन्ध एवं वनमाला जैसे आभूषणों से सुसज्जित हैं। उनके ऊपरी दाहिने हाथ में धारण किये कमलपुष्प पर शिवलिंग तथा निचले हाथ वरदमुद्रा में हैं। बायें हाथ में कमलपुष्प सहित उत्कटिकासनमुद्रा में गणेश तथा निचला हाथ खण्डित है। प्रतिमा के सबसे ऊपरी हिस्से के दोनों पार्श्वों में क्रमशः दाहिने ओर अर्धपर्यंकासन मुद्रा में चतुर्भजी ब्रह्मा एवं बायीं ओर उत्कटिकासन मुद्रा में द्विभुजी ब्राह्मणी देवी का अंकन है। पादपीठ के दोनों पार्श्वों में दो महिला भक्तों को अंजलिमुद्रा में तथा उसके ठीक ऊपर दो परिचारिकाओं को हाथ में शूल धारण किये हुये दिखलाया गया है।

लक्ष्मी

लक्ष्मी को भाग्यदेवी या वैभव की अधिष्ठातृ देवी के रूप में भी वर्णित किया गया है। इनकी उत्पत्ति के बारे में यह कहा गया है कि देवों तथा असुरों द्वारा समुद्र मन्थन करते समय उससे उत्पन्न हुये चौदह रत्नों में से लक्ष्मी भी एक रत्न थीं और वे कमल के आसन पर बैठी हुई कमल पुष्प हाथ में धारण किये हुए प्रकट हुई थीं। विष्णु धर्मोतर पुराण में लक्ष्मी के रूप का विशद उल्लेख हुआ है।[16] इस ग्रन्थ में देवी के दो प्रकार के रूपों का वर्णन किया गया है। हरि के समीप उपस्थित रहने वाली उन्हें दो भुजा वाली बताया जाता है। इस रूप में वे अत्यधिक सुन्दर और अपने हाथ में कमल धारण किये सभी आभूषणों से शोभित रहती हैं, परन्तु लक्ष्मी को जब विष्णु से पृथक् बताया जाता है तब वे चार भुजाओं वाली रहती हैं। सुन्दर सिंहासन पर वे आसीन रहती हैं। सिहांसन के ऊपर आठ दल वाला सुन्दर कमल खिला हुआ चित्रित रहता है। देवी के हाथों में कमल, अमृत कलश एवं शंख रहता है। उनके पीछे दो सुन्दर हाथी अपनी सूँडों में जल भरकर नीचे की ओर छिड़कते हुए प्रदर्शित किये जाते हैं। उनके सिर पर सुन्दर कमल सुशोभित रहता है।[17]

प्राप्ति स्थल : एरण, सागर, म. प्र. **प्रतिमा :** गजलक्ष्मी

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** चतुर्थ शताब्दी ईसवी

प्रस्तुत द्विभुजी गजलक्ष्मी प्रतिमा अर्धपर्यांकासनमुद्रा में प्रदर्शित है। देवी दाहिने हाथ में अस्पष्ट सनाल कमल धारण की होंगी। बायाँ हाथ खण्डित है, जो संभवतः घुटने पर रहा होगा। देवी गले में एकावली, कर्ण कुण्डल, अलंकृत केश विन्यास, पारदर्शी उत्तरी एवं अधोवस्त्र धारण की है। प्रतिमा के सबसे ऊपर दोनों पार्श्वों में दो गजों द्वारा अपनी सूँड़ में जल से आपूरित घट द्वारा देवी लक्ष्मी का अभिषेक किया जा रहा है। यह प्रतिमा अपनी संतुलित रचना, सूक्ष्म अनुपात एवं स्वाभाविक लावण्य से गुप्त कला की विशेषता को प्रदर्शित करती है।

कौमारी

कौमारी कुमार कार्तिकेय की शक्ति है। ये सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली है। रक्त वस्त्र धारण करती है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में इन्हें चतुर्भुजी, षड्भुजी एवं द्वादशभुजी बतलाया है। इनके भुजाओं में शक्ति ध्वज, दण्ड, धनुष, बाण, घण्टा एवं पद्म पात्र लिये बतलाया गया है। इनका एक हाथ वरद तथा दूसरा अभयमुद्रा में है।[18] अंशुमद्भेदागम में कौमारी उदुम्बर वृक्ष के नीचे बैठी दिखायी जाती हैं।

प्राप्ति स्थल : लोहारी, जबलपुर, म. प्र. **प्रतिमा :** कौमारी

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 11वीं शताब्दी ईसवी

आकार : 72x44 सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.364

प्रस्तुत प्रतिमा में त्रिमुखी कौमारी एक पादपीठ पर ललितासनमुद्रा में आसनस्थ हैं, जिसके नीचे उनका वाहन मयूर अंकित है। चतुर्भुजी देवी की समस्त भुजाएँ, मुखमण्डल एवं वक्षस्थल खण्डित हैं। वे अलंकृत जटामुकुट, कुण्डल, हार, ग्रैवयक, भुजबंध, उत्तरीय, कटिसूत्र एवं पायल से सज्जित हैं। प्रतिमा के सबसे ऊपर दोनो पार्श्वों में मालाधारी गंधर्व एवं व्याल का अंकन है। पादपीठ के दाहिने पार्श्व में पुरुष एवं बायें स्त्री का अंकन है, जिसके ठीक निचले भाग में नृत्यरत चतुर्भुजी स्त्रियों का अंकन है।

वाराही

वराह की शक्ति वाराही कृष्ण वर्ण की विशाल उदर वाली हैं। उनका मुख वराह के सदृश होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अंशुमद्भेदागम, रूपमण्डन एवं पूर्णकारणागम आदि ग्रन्थों में इनका प्रतिमा विधान मिलता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार उनके दाहिने हाथों में दण्ड, खड्ग एवं एक वरदमुद्रा में तथा बायें हाथों में खेट, पास एवं एक हाथ अभयमुद्रा में रहता है।[19]

प्राप्ति स्थल : सागर, म. प्र. **प्रतिमा :** वाराही

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 8वीं शताब्दी ईसवी

आकार : 108x62 सेमी. **पंजीयन संख्याः** R.365

प्रस्तुत वाराही प्रतिमा एक आयताकार प्रस्तरखण्ड पर आलीढ़मुदा में बायीं ओर देखते हुये प्रदर्शित है। देवी का बायाँ पैर एक कच्छप के ऊपर है। द्विभुजी वाराही के दाहिने हाथ में खड्ग एवं बायें मुड़े हाथ के ऊपर करबद्ध देवी पृथ्वी की खण्डित प्रतिमा है। वे ग्रैवयक, कंकण, कटिमेखला, पादवलय एवं वनमाला से सुसज्जित हैं। उनके लम्बे एवं घुँघराले केशों का अंकन अत्यन्त बारीकी से किया गया है। प्रतिमा के ऊपरी दोनों पार्श्वों में मालाधारी विद्याधर का अंकन है।

सप्तमातृका

भारतीय मूर्तिविधान में मातृकाओं का विशेष महत्व है। इनकी संख्या ग्रंथ भेद से सात, आठ या सोलह तक गिनायी गयी है। सामान्यतया सप्तमातृकाओं में ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा की गणना होती है। इनकी उत्पत्ति के विषय में पुराणों में कई परंपराएँ हैं। वराहपुराण की परंपरा के अनुसार सप्तमातृकाओं की उत्पत्ति के संबंध में अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[20], वृहत्संहिता[21], सुप्रभादेगम, मत्स्यपुराण एवं अग्निपुराण में सप्तमातृकाओं के प्रतिमा लक्षणों का वर्णन मिलता है।

प्राप्ति स्थल : तुमैन, अशोकनगर, म. प्र. **प्रतिमा :** सप्तमातृका

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर **काल :** 8वीं शताब्दी ईसवी

आकार : 38x108 सेमी. **पंजीयन संख्या :** R.366

प्रस्तुत सप्तमातृकाओं को एक फलक पर उत्कीर्ण किया गया है। सभी मातृकाएँ द्विभुजी एवं प्रभामण्डल से सज्जित हैं। फलक पर बायें से दाहिनी ओर क्रमशः ब्रह्माणी, अपने वाहन हंस एवं बायें हाथ में अक्षमाला लिये हुये, कौमारी अपने वाहन मयूर के साथ, महेश्वरी अपने वाहन वृषभ के साथ वरदमुद्रा में, वैष्णवी अपने वाहन गरुड़ के साथ तथा आलीढ़मुद्रा में प्रदर्शित वाराही का वाहन खण्डित हो गया है। इसी क्रम में इन्द्राणी का वाहन गज, जो खण्डित हो गया है तथा अन्त में क्षीण शरीर, धसी हुयी आँखों, नरमुण्ड एवं खट्वांग धारण की हुयी चामुण्डा का अंकन है। सभी मातृकाएँ करण्ड मुकुट, कर्णाभूषण, हार, अपने वाहनों एवं आयुधों के साथ प्रदर्शित हैं।

संदर्भ

1. मोनीयर, विलियम्स, एम., रिलिजन लाइफ एण्ड थॉट इन इण्डिया, लन्दन, 1883, पृ0 255

2. मार्कण्डेय पुराण देवी माहात्म्य, 5/17/10
3. वही - 5/21-22
4. महाभारत 4, 6, 15
5. महाभारत 6, 23, 8
6. मार्कण्डेय पुराण, अध्याय 79, कल्याण, पाँचवाँ स्कन्ध, अध्याय 4 वर्ष 34, संख्या - 1
7. देवी भागवत पुराण 10.11/16-18
8. ब्रह्मपुराण, 34, 29, 75-88, वामन पुराण, 19-20
9. मार्कण्डेयपुराण 79, 51, 80, 1, 80, 29, 8
10. विष्णु धर्मोत्तर पुराण 123, 8-10
चामुण्ड प्रेतगा रक्ता विकृता स्याहि भूषणा। दंष्ट्रोग्रा क्षीणदेहा च गर्ताक्षी भीम रूपिणी।।
दिम्बाहुः क्षाम कुक्षिश्च मुसलं कवचं शरम्। अंकुश विभ्रती खंग दक्षिणेष्वक्ष वामतः।।
खेटं पाश धनुर्दण्ड कुठारं चेति विभ्रति।
11. गरुण पुराण, 1, 38, 5
- अवस्थी, अवध बिहारी लाल, गरुड़ पुराण : एक अध्ययन, पृ. 391
12. अपराजितपृच्छा, पृ. 223
13. रूपमण्डन, 5, 72
चामुण्ड प्रेतगा रक्ता विकृता स्याहिभूषणा। द्विभुजा वा प्रकर्तव्या कार्तिका कार्य मन्निता।।
14. अंशुभद्भेदागम् पटल - 47
चतुर्भुजा त्रिनेत्रा च रक्त वर्गोर्ध्वकेशिका।
कपाल शूल हस्ता च वरदाभय पाणिनी।।
15. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 122/9-11
16. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 82/1
17. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 82/3-8
18. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 119/58
19. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 122/17
20. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 3/73
21. वृहत्संहिता, 58/56